MADHYAMIK KAKSHA KE ANUSUCHIT JATI KE VIDHYARTHIYO KE PARIWARIK VATAVARAN KA UNKI SAMAJIK BUDDHI PAR PRABHAV KA ADHYAYAN

माध्यमिक कक्षा के अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी सामाजिक बुद्धि पर प्रभाव का अध्ययन।

Jai Nath Yadav [1] | Shree Bhupendra Nigam [2]

[1] शोध छात्र, शिक्षा संकाय, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

[2] सेवा निवृत्त प्रभारी प्राचार्य, शासकीय शिक्षा मनोविज्ञान एवं संदर्शन महाविद्यालय, जबलपुर

प्रस्तावना :
वर्तमान समय में चहुँओर अत्यधिक वैज्ञानिक और तकनीकी विकास हो रहा है फिर भी यह देख जा रहा है सभी जाति, धर्म के लोग इससे उतना लाभ नहीं उठा पा रहे हैं वर्तमान समय में लोग सामाजिक, आर्थिक दृष्टिकोण से अच्छे है वे और समृद्वशाली होते जा रहे हैं। जो सामान्य है और सामान्य से कम हैं, उनमें यह बात देखने को नही मिल रही है। शोधकर्ता यह देखने का प्रयास कर रहा है कि क्या अनुसूचित जाति के किशोरों की सामाजिक बुद्धि पर पारिवारिक वातावरण का कोई प्रभाव पड़ रहा है या नहीं? वास्तव में परिवार का जो वातावरण होता है वह अन्यंत महत्वपूर्ण होता है। बल्कि यह माना जाता है कि 0–5 वर्ष की जो अवधि होती है उसमें व्यक्तित्व का विकास हो जाता है और आगे उसमें अनुभव जुड़ते हुए चले जाते है।

अनुसूचित जातियों के किशोरों मे सामाजिक बुद्धि में सामाजिक आर्थिक स्थिति के कारण पिछड़ापन है। इसको जानने के लिए हमें प्राचीन भारतीय संस्कृति का सहारा लेना पड़ेगा तब जाकर इसके मूल कारणों को समझा जा सकेगा। शोधकर्ता की यही दृष्टि है, महाकाव्यकालीन काल में भील राजा के पुत्र एकलव्य जिसे गुरु तक नहीं नसीब हुए और वह अर्जुन से बड़ा धर्नुधर निकला। इससे कहाँ जा सकता है कि परिवार के सामाजिक–आर्थिक वातावरण का मानव के व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता है।

अनुसूचित जाति को मुख्य धारा में जोड़ने एवं इनके पुनरुत्थान के लिए कुछ समाज सेवकों जैसे–श्रीमती सावित्री बाई फूले जी, श्री ज्योतिबा फूले महात्मा गाँधी, डाँ अम्बेडकर, आदि ने भरसक प्रयास किये। इनमें शिक्षा का न्यून स्तर होने के कारण इस समाज में जो वांछित परिवर्तन होने थे वे उस गति से नहीं हो पाये है।

शिक्षा के क्षेत्र में शोधकर्ताओं को इन व्यक्तित्व एवं अन्य विशेषताओं के बारे में अध्ययन करने की प्रेरणा मिली जिससे यदि कुछ असमानता पायी जाती है तो उचित मार्गदर्शन एवं परामर्श के द्वारा इन्हें सकारात्मक व्यक्तित्व विकास की दिशा में प्रेरित किया जा सके। इस संबंध में कुछ महत्वपूर्ण कार्यों का विवरण आगे प्रस्तुत किया जा रहा है जिनके अध्ययन एवं विश्लेषण के माध्यम से शोधकर्ता को वर्तमान समस्या को करने की प्रेरणा मिली जिससे शोध निष्कर्षो के माध्यम से दिये गये सुझावों से अनुसूचित जाति के किशोरों के पारिवारिक वातावरण को उचित मार्गदर्शन करने हेतु प्रयास किये जा सके जिससे उनकी सामाजिक बुद्धि का अधिकतम सम्भाव्य विकास हो सके एवं वे अपनी योग्यताओं का अधिकतम सम्भाव्य विकास हो सके एवं वे अपनी योग्यताओं का अधिकतम सम्भाव्य उपयोग कर सकें। नायक, प्रमोद कुमार एवं शुक्ला, रश्मि (2018) ने पाया कि पारिवारिक वातावरण, छात्रों की सामाजिक बुद्धि को सकारात्मक रुप से प्रभावित करता है क्योकि अच्छे पारिवारिक वातावरण के छात्रों की सामाजिक बुद्धि कम अच्छे पारिवारिक वातावरण की तुलना में अधिक थी। धनावत, गिरीश एम. एवं अन्य (2016) ने यह निष्कर्ष पाया कि जिन परिवारों मे कार्य करने की प्रकृति एवं संवेगात्मक बुद्धि में सकारात्मक संबंध या वहाँ के किशोरों की संवेगात्मक बुद्धि का विकास अच्छा था अर्थात जिस परिवार में कार्य करने की प्रकृति स्वस्थ्य होती है उन किशोरों की संवेगात्मक बुद्धि भली–भाँति विकसित हो पाती है। कौर, हरप्रीत एवं कलरअम्ना, आशु (2004) के द्वारा यह ज्ञात हुआ कि सामाजिक बुद्धि पर सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं पारिवारिक वातावरण का सार्थक प्रभाव पड़ता है अतः कहाँ जा सकता है कि पारिवारिक वातावरण एवं आर्थिक स्तर का सामाजिक बुद्धि पर गहन प्रभाव पड़ता है।

अध्ययन के माध्यम से जो निष्कर्ष निकलेंगे उनके माध्यम से विद्यार्थि, शिक्षक, प्रशासक और अभिभावकों को यह सुझाव दिये जा सकेगें कि किस तरह से एक अच्छा पारिवारिक वातावरण विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि के विकास में सहायक होता है जिससे कि वे अपनी शिक्षा और पारिवारिक वातावरण का अपने बच्चों को उनके विकास में अधिकतम योगदान देने में उपयोग कर सकें।

उद्देश्य :
विद्यार्थियों की समाजिक बुद्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन।

परिकल्पना :
विद्यार्थियों के सामाजिक बुद्धि पर पारिवारिक वातावरण का सार्थक प्रभाव नही होता है।

अध्यय विधि :
प्रस्तुत शोध कार्य सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यार्दश :
प्रस्तुत शोध कार्य हेतु निम्नांकित प्राथमिक न्यादर्श हेतु चयनित किया गया।

समूह	संख्या
छात्र	300
छात्रा	300
कुल	600

उपरोक्त प्राथमिक न्यार्दश पर डॉ. के. एस. मिश्रा द्वारा निर्मित पारिवारिक वातावरण मापनी का प्रशासन किया गया। मापनी के पारिवारिक वातावरण के दस आयामों के उच्च एवं निम्न श्रेणी के विद्यार्थियों को अंतिम न्यार्दश के लिए चुना गया। जिनकी संख्या निम्नानुसार है।

कारक	संख्या		
	उच्च	निम्न	योग
नियंत्रण	257	86	343
सुरक्षा	379	70	449
दण्ड	255	118	373
अनुरुपता	229	137	366
सामाजिक एकाकीपन	228	84	312
पुरस्कार	251	92	343
व्यवहार नियंत्रण के लिए प्यार व आदर से वांचित रखना	305	95	400
बच्चों का बिना किसी अपेक्षा के लालन पालन	314	62	376
तिरस्कार	349	78	427
अनुनयात्मक	252	86	338

परीक्षण :
पारिवारिक वातावरण मापनी – के. एस. मिश्रा

सामाजिक बुद्धि परीक्षण – एस. माथुर

विधि :
प्राथमिक न्यार्दश पर पारिवारिक वातावरण मापनी का प्रशासन करने के उपरांत पारिवारिक वातारण के 10 आयामो में उच्च एवं निम्न विद्यार्थियों को छॉट कर उन पर सामाजिक बुद्धि मापनी का प्रशासन किया गया फलांकन के उपरांत परिकल्पनाओं के सत्यापन हेतु क्रांतिक अनुपात की गणना की गयी।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या :
परिणामों का विश्लेषण आगे दी हुई तालिका मे प्रस्तुत किया गया है–

तालिका क्रमांक 03
सामाजिक बुद्धि पर पारिवारिक वातावरण के 10 आयामों के तुलनात्मक परिणाम

पारिवारिक वातावरण के आयाम	श्रेणी	संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	क्रांतिक अनुपात
नियंत्रण	उच्च	257	67.28	20.96	2.06
	निम्न	86	63.94	8.88	
सुरक्षा	उच्च	379	66.52	9.80	4.46
	निम्न	70	62.26	6.80	
दण्ड	उच्च	255	65.86	9.67	0.28
	निम्न	118	65.54	10.34	
अनुरुपता	उच्च	229	66.76	9.24	5.61
	निम्न	137	61.14	9.31	
सामाजिक एकाकीपन	उच्च	228	62.72	9.39	5.54
	निम्न	84	69.38	9.43	
पुरस्कार	उच्च	251	67.47	9.91	5.07
	निम्न	92	62.08	8.25	
व्यवहार नियंत्रण के लिए प्यार व आदर से वांचित रखना	उच्च	305	63.25	9.47	6.03
	निम्न	95	69.53	8.66	
बच्चों का बिना किसी अपेक्षा के लालन–पालन	उच्च	314	67.38	9.10	1.23
	निम्न	62	65.87	8.74	
तिरस्कार	उच्च	349	63.31	9.66	7.91
	निम्न	78	71.83	8.27	
अनुनयात्मक	उच्च	252	64.20	10.09	1.38
	निम्न	86	65.92	9.94	

उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट हो जाता है कि सामाजिक बुद्धि पर पारिवारिक वातावरण के कुछ आयामों का सार्थक प्रभाव पड़ा है, अर्थात कहा जा सकता है कि पारिवारिक वातावरण का सामाजिक बुद्धि पर आंशिक प्रभाव पड़ता है। पारिवारिक वातावरण के आयाम नियंत्रण,सुरक्षा, अनुरुपता, सामाजिक एकाकीपन, पुरस्कार, व्यवहार नियंत्रण के लिए प्यार व आदर से वंचित रखना एवं तिरस्कार आयामों का सार्थक प्रभाव पड़ता है। अन्य आयाम–दण्ड, बच्चों का बिना किसी अपेक्षा के लालन–पालन एवं अनुनयात्मक सामाजिक बुद्धि को सार्थक रुप से प्रभावित नही करते है। उच्च नियंत्रण, सुरक्षा, अनुरुपता एवं पुरस्कार में उच्च समूह की सामाजिक बुद्धि निम्न समूह की अपेक्षा अधिक है। इसके विपरित सामाजिक एकाकीपन, व्यवहार नियंत्रण के लिए प्यार व आदर से वंचित रखना एवं तिरस्कार में निम्न समूहों के सामाजिक बुद्धि उच्च समूहों की अपेक्षा अधिक है।

पारिवारिक वातावरण में उच्च नियंत्रण अधिक सुरक्षा अधिक अनुरुपता एवं अधिक पुरस्कार मिलना विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि को सकारात्मक रुप से प्रभावित कर रहे है। सामाजिक बुद्धि के अन्तर्गत मुख्य रुप से सामाजिक सम्बंधों का अच्छे से निर्वाह करना मुख्य गुण के रुप में माना जाता है, अधिक सामाजिक बुद्धि यह प्रदर्शित कर रही है कि यदि पारिवारिक वातावरण में विद्यार्थियों पर पर्याप्त नियंत्रण रहता है, उन्हें आवश्यकता पड़ने पर वांछित सुरक्षा का प्रत्यक्षीकरण होता है, वातारण में विभिन्न सदस्यो के मध्य अनुरुपता रहती है, तथा आवश्यकतानुसार उन्हे पुरस्कार के रुप में प्रशंसा की जाती है तो निश्चित रुप से इस प्रकार का वातावरण उन्हें और अधिक सामाजिक होने के लिए प्रेरण प्रदान करता है जो निश्चित रुप से एक अच्छे समायोजन की दिशा में सकारात्मक प्रयास होता है जो सामाजिक बुद्धि के विकास में सहायक होता है।

उपरोक्त सारणी में प्रदार्शित परिणाम यह भी प्रदर्शित कर रहे है कि यदि विद्यार्थियों में सामाजिक एकाकीपन होता है, व्यवहार नियंत्रण के लिए उन्हें प्यार व आदर से वंचित रखा जाता है। उन्हें सम्भवतः अन्य सदस्यों के सामने तिरस्कृत किया जाता है तो ऐसे में वे परिवार के अन्य सदस्यों से उतना अधिक मेल–जोल रखने में संकोच करने लगते है और वे अन्य लोगों से दुरी बना लेते है। ऐसी स्थिती मे उन्हें सामाजिक अन्तःक्रिया के बहुत कम अवसर मिलने की सम्भवना हो जाती है, जिससे वे एकाकी हो जाने के फलस्वरुप अपनी सामाजिक बुद्धि के विकास में पिछड़ जाते है। यह अलगाव वादी प्रक्रिया उनकी सामाजिक बुद्धि के विकास में बॉंधा बन जाती है।

पारिवारिक वातावरण के आयाम दण्ड, बच्चों का बिना किसी अपेक्षा के लालन–पालन एवं अनुनयात्मक का सामाजिक बुद्धि पर सार्थक प्रभाव नही पड़ा है। यह प्रदर्शित कर रहा है कि बच्चें सम्भवतः यह समझने लगे है कि जब वे कोई ऐसा काम करते है, जो परिवार के मान्यताओं और मर्यादाओं के अनुरुप नही है तो वे दण्ड़ के वास्तविक कारण को समझते हुऐ उसके प्रति कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नही करते है, सम्भवतः जब बच्चों का बिना किसी अपेक्षा के लालन–पालन किया जाता है तो बच्चों में तटस्थता का भाव हो जाता है जिसमे उनकी कोई सकारात्मक सामाजिक अन्तःक्रिया नही हो पाती एवं वे वातावरण को जैसा है वैसा ही

स्वीकार कर लेते है। ऐसे मे अच्छे सामाजिक सम्बंधों के अभाव में सामाजिक बुद्धि का उचित विकास नही हो जाता। इसी प्रकार अनुनयात्मक आयाम उन्हें सब आयाम उन्हें सब कुछ स्वीकार करने कि दिशा में एक कदम होता है, जिसमें भी सामाजिक अन्तःक्रियाओं का अभाव सा हो जाता है सम्भवतः यही कारण है कि इन कारकों का सामाजिक बुद्धि पर सार्थक प्रभाव नही पड़ा है।

उपरोक्त परिणामों से स्पष्ट हो जाता है कि पारिवारिक वातावरण के विभिन्न आयाम विद्यार्थियों के सामाजिक बुद्धि को अलग–अलग तरह से प्रभावित करते है, वे आयाम जो सामाजिक अन्तःक्रिया को प्रोत्साहित करते है, उनकी अधिक मात्रा एवं वे आयाम जो सामाजिक विकास में बाँधा उत्पन्न कर सकते है उनका न्यून होना सामाजिक बुद्धि के विकास में सहायक होता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह भी महत्वपूर्ण है कि विद्यार्थियों मे बैयक्तिक भिन्नता होती है जिसके कारण वे एक ही उददिपक (पारिवारिक वातावरण के आयाम) का अलग–अलग तरह से प्रत्यक्षीकरण करते है, जो उन्हें सामाजिक अन्तःक्रिया के लिए या तो प्रेरित करता है अथवा उसे वांछित करता है ऐसे मे सामाजिक बुद्धि का विकास अलग तरह से प्रभावित होता है।

प्रस्तुत शोध में समग्र पारिवारिक वातावरण सम्बंधी कोइ मानक नही दिये गये है एव अलग–अलग आयामों को मिल कर पारिवारिक वातावरण बना है, इस सर्न्दभ में जो पूर्व शोध कार्य हुऐ है उनमें पारिवारिक वातावरण का समग्र रुप से सामाजिक बुद्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है अलग–अलग आयामों के समाजिक बुद्धि पर प्रभाव सम्बंधी शोध कार्य उपलब्ध नही हो पाये है अतः समग्र पारिवारिक वातावरण के सामाजिक बुद्धि पर प्रभाव सम्बंधी शोध निष्कर्षो को प्रस्तुत किया जाता है।

नायक, प्रमोद कुमार एवं शुक्ला, रश्मि (2018) पारिवारिक वातावरण छात्रों की सामाजिक बुद्धि को सकारात्मक रुप से प्रभावित करता, है। कौर, हरप्रीत एवं कलर अम्ना, आशु (2004) ने पाया कि सामाजिक बुद्धि पर पारिवारिक वातावरण का सार्थक प्रभाव पड़ता है। गुप्ता, संजय कुमार एम (2016) ने पाया कि पारिवारिक एवं वातावरण सम्बंधी चर बहु–बुद्धियों को सकारात्मक रुप से प्रभावित करते है जब कि कुछ अन्य का सार्थक प्रभाव नही पड़ता है अर्थात सामाजिक बुद्धि के पारिवारिक चर आंशिक रुप से प्रभावित करते है। धनावत, गिरीश एवं अन्य (2016) ने भी पाया कि परिवार के सदस्यों के कार्य करने की प्रकृति एवं संवेगात्मक बुद्धि के मध्य सकारात्मक सम्बंध था। अर्थात जिन परिवारों में आपस में समन्वय था एवं कार्य करने की प्रकृति स्वस्थ्य थी, वहाँ के किशोरों की संवेगात्मक बुद्धि का विकास अच्छा था।

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि पारिवारिक वातावरण प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रुप से विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि को प्रभावित करता है। पारिवारिक वातावरण में बहुत सारे विभिन्न कारक होते है जो आपस में भी अन्तःक्रिया कर के विविध प्रकार से व्यक्तित्व गुणों को प्रभावित करते है, अतः वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे शोध के परिणामों का मिश्रित प्रकार का आना स्वाभाविक प्रतीत होता है। सामाजिक बुद्धि की प्रत्येक व्यक्ति के जीवन मे महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः शोध परिणाम अभिभावकों शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को मार्ग दर्शन प्रदान करने में सहायक होगें, कि किस प्रकार सकारात्मक पक्षों को ग्रहण किया जाय एव नकारात्मक पक्षों को परिमार्जित करने का प्रयास किया जाय।

निष्कर्ष :

शोध के निम्नांकित निष्कर्ष निकले है–

- उच्च–नियंत्रण, सुरक्षा, अनुरुपता, पुरस्कार एवं व्यवहार नियंत्रण के लिए प्यार व आदर से वंचित रखना, विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि को सकारात्मक रुप से प्रभावित करते है।
- सामाजिक एकाकीपन, व्यवहार नियंत्रण के लिए प्यार व आदर से वंचित रखना एवं तिरस्कार आयामों का कम होना सामाजिक बुद्धि को सकारात्मक रुप से प्रभावित करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. मंगल, एस.के. एवं मंगल, शुभ्रा (2018) अधिगमकर्ता का विकास, मेरठ, इंटरनेशनल पब्लिकेशन हाऊस, पृ 339–342
2. पाठक पी. डी. (2017) शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन, संशोधित संस्करण पृ 57–58
3. पाठक पी.डी. (2016) वाल्यावस्था एवं बड़ा होना, आगरा विनोद पुस्तक मंदिर पृ 188
4. गुप्ता, एस. पी. एवं गुप्ता. अलका (2012) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन है पृ 177–182
5. मित्तल, एम. एल (2012) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, दिल्ली पियर्सन सीरिज इन इजुकेशन, प्रथम मुद्रण पृ 53–54
6. सक्सेना, एन. आर. स्वरुप (2007)शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, मेरठ आर. लाल बुक डिपों, पृ 48–50

JOURNALS:

7. Naik, Pramod Kumar and Shukla, Rashmi (2018), Impact of home environment on social and emotional intelligence of adolescents: A study, International Journal of Advanced Education and Research, Vol. 3, Issue-5, September 2018; P.47-51
8. Gupta, Dr.Sanjay Kumar M. (2016), Effect of family variables on multiple intelligence of secondary school students of Gujrat state, International Journal of Indian Psychology, Vol.-3, Issue-3, No.4, (April-June-2016)
9. Dhanawat, Girish M. and others (2016), Relationship of family functioning and emotional intelligence in adolescents Original Article Pravara Med Rev 2016, 8(2)
10. Kaur, Harpeet and Kalaramna, Ashu (2004), Study of Interretationship between environment, social intelligence and socio-economic status among males and females J.hum. Ecol., 16(2):137-140